कलम, पट्टी, बुद्धिका

बालकों के जीवन को संस्कारित, सफल और सार्थक
करने हेतु एक लघु पुस्तिका

-:लेखक:-

आचार्य वसुनंदी मुनि

प्रकाशकः

डी.सी. मीडीया ''निकुंज'' टूण्डला
फिरोजाबाद उ.प्र.

ॐ ह्रीं नमः

पंचम संस्करण : अगस्त 2015
प्रतियाँ : 5,000

कलम, पट्टी, बुद्धिका

आचार्य वसुनंदी मुनि

मंगलाशीषः

प.पू. राष्ट्रसंत, सिद्धांत चक्रवर्ती दि. श्वेतपिच्छाचार्य श्री १०८ विद्यानंद जी मुनिराज

प्राप्ति स्थानः

श्री सत्यार्थी मीडीया राष्ट्रीय कार्यालय
रविन्द्र भवन इन्द्रा नगर टूण्डला चौराहा
फिरोजाबाद (उत्तर प्रदेश)

मुद्रक :जैन रत्न सचिन जैन ''निकुंज''
मो. 9058017645

प्रस्तुत पुस्तक में मुद्रित समस्त सामग्री, आवरण पृष्ठ, चित्रादि के सम्बन्ध में प्रकाशक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इसके किसी भी अंश को पूर्व में बिना लिखित अनुमति के मुद्रित करना या करवाना, कॉपीराइट नियमों का उल्लंघन होगा, जिसका सम्पूर्ण दायित्व उन्हीं का होगा और हर्जे – खर्चे के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे ।

रुपये 20/-

दो शब्द

आचार्य वसुनंदी मुनि

सम्यग्ज्ञान एक ऐसा चिन्मय दीपक है जिसकी उजास आत्मा के प्रत्येक प्रदेश को प्रकाशित करती है। आत्मा के समग्र गुणों में ज्ञान गुण की ही प्रधानता है, बिना ज्ञान के न तो आत्मा को जाना जा सकता है और न ही अनात्मा को। गुण और दोषों का ज्ञान भी ज्ञान के द्वारा ही संभव है। सम्यक्ज्ञान के दीपक से हीन व्यक्ति के लिए पूरा जीवन अंधकार मय होता है। सम्यक् ज्ञान के बिना सुख-शांति पूर्ण जीवन यापन असंभव ही है। मनुष्य को केवल पशु की तरह ही जीना है या मांगलिक और विकास शील जीवन जीना है। सर्वांगीण विकासी जीवन अध्यात्म विद्या के बिना असंभव है, अर्थ से उपार्जित विद्या इस अर्थ प्रधान युग में अर्थ दे सकती है, धनोपार्जन के साधन और उपाय प्रस्तुत कर सकती है किन्तु परमार्थ को देने में असमर्थ ही है। व्यक्ति और सृष्टि के चरम और परम विकास में सुसमर्थ कारण अध्यात्मिक विद्या ही है। सुख-शांति और परमार्थ की सिद्धि के लिए भौतिक ज्ञान या पाश्चात्य संस्कृति के ज्ञान की पुस्तकों का बोझा उठाने के साथ-साथ यदि आध्यात्मिकता की कलम पट्टिका एवं लघु पुस्तिका भी दे दी जाये तो सारा जीवन सफल और सार्थक हो सकता है।

प्रस्तुत लघु पुस्तिका बालकों के जीवन को सुखद व शांति पूर्ण जीवन बनाने को माता के समान है, शिक्षा का प्रारम्भ पंच परमेष्ठी या सिद्धों के स्मरण से होना चाहिए। प्राग्वैदिक काल में भी शिक्षा का प्रारम्भ "ऊँ नमः सिद्धम्" से होता था, आज उसका रूप बिगड़ कर "ओं नामा सिधं" उपहास रूप में पड़ गया है। शिक्षा का प्रारम्भ स्वर्ण शलाका व स्वर्ण पत्र/रजत पत्र या ताम्र पत्रिका से होता था पुनः काली पट्टी पर सफेद खड़िया से लिखना प्रारम्भ होता था। पहले व्यक्ति काले पत्रों पर भी धवल अक्षर स्थापित करते थे किन्तु आज काल दोष से सफेद/धवल पत्रों पर भी काली स्याही से लिखे जा रहे हैं। तब व्यक्तियों के श्याम हृदय भी ज्ञान के धवल अक्षरों से (शिक्षा के बढ़ते-बढ़ते) धवल हो जाते थे, केशों की धवलता के साथ-साथ हृदय भी धवल होते जाते थे, किन्तु आज व्यक्ति को धवल केशों को श्याम कराने में आनन्द आता है, शायद यह हृदय की कलुषिता का ही प्रभाव है।

प्रस्तुत "पुस्तिका" "कलम-पट्टी बुध्दिका" अतीत की सुसंस्कृति के सद्ज्ञान के दीपक की ओर प्रेरित कराने वाली होगी, इस दीपक की धवल ज्योति प.पू. राष्ट्र संत, सिद्धान्त चक्रवर्ती दि. जैनाचार्य गुरुदेव श्री विद्यानंद जी मुनिराज के आशीर्वाद का सुफल है। इस प्रकाश को ग्रहण करें। दीपक की कालिमा रूपी त्रुटियों का परित्याग करें, यही बाल-गोपाल बच्चों को हमारा शुभाशीष है।

ऊँ ह्रीं नमः
कश्चिदल्पज्ञ श्रमणः पाठकः
जिन चरणानुचरः संयमानुरक्तः
तिजारा (अलवर) राज०

भाग -प्रथम

''मंगल गान''

अरिहंतों को नमस्कार, श्री सिद्धों को नमस्कार।

आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार।।

जग में जितने साधुगण हैं, उन सबको बंदू बार-बार

अरिहंतों को नमस्कार.....।।

(अध्याय-एक)

णमोकार मंत्र

प्रश्न.1 **णमोकार मंत्र किसे कहते हैं?**

उत्तर- जिस मंत्र में पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है, उसे णमोकार मंत्र कहते हैं।

प्रश्न.2 **परमेष्ठी किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो परम पद में स्थित हैं, उन्हें परमेष्ठी कहते हैं।

प्रश्न.3 **परमेष्ठी कितने होते हैं?**

उत्तर- परमेष्ठी पांच होते हैं।

प्रश्न.4 **पांच परमेष्ठी के नाम बताओ?**

उत्तर- 1. श्री अरिहंत जी, 2. श्री सिद्ध जी,
3. श्री आचार्य जी 4. श्री उपाध्याय जी,
5. श्री साधु परमेष्ठी जी।

प्रश्न.5 **णमोकार मंत्र को शुद्ध रूप में सुनाओ?**

उत्तर- णमो - अरिहंताणं
णमो - सिद्धाणं
णमो - आइरियाणं
णमो - उवज्झायाणं
णमो - लोए सव्व साहूणं

अध्याय-दो

णमोकार मंत्र की महिमा

प्रश्न.1 **णमोकार मंत्र का अर्थ बताओ?**

उत्तर- अरिहंतों को नमस्कार हो, सिद्धों को नमस्कार हो, आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो, तीन लोक में विराजमान सभी साधुओं को नमस्कार हो।।

प्रश्न.2 **णमोकार मंत्र के महात्म्य की गाथा सुनाओ?**

उत्तर- एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलम्।।

प्रश्न.3 **णमोकार मंत्र का प्रभाव बताओ?**

उत्तर- णमोकार मंत्र के प्रभाव से नाग-नागिनी, कुत्ता, हाथी, मेढ़ा, आदि तिर्यंचों को देवगति की प्राप्ति हुई और अंजन चोर के समान अनेक पापी जीवों को मोक्ष प्राप्त हो गया।

प्रश्न.4 **णमोकार मंत्र किस भाषा में है?**

उत्तर- णमोकार मंत्र प्राकृत भाषा में है।

प्रश्न.5 **णमोकार मंत्र कब से है तथा कब तक रहेगा?**

उत्तर- णमोकार मंत्र अनादि काल से है और अंनतकाल तक रहेगा।

अध्याय-तीन

तीर्थंकर परिचय

प्रश्न.1 **तीर्थंकर किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो धर्म तीर्थ को चलाते हैं, जिनके कल्याणक होते हैं, वे तीर्थंकर कहलाते हैं।

प्रश्न.2 **पाँच कल्याणक कौन-कौन से होते हैं?**

उत्तर- 1. गर्भ कल्याणक, 2. जन्म कल्याणक,
3. तप कल्याणक 4. ज्ञान कल्याणक,
5. मोक्ष कल्याणक

प्रश्न.3 **तीर्थंकर के कितने कल्याणक होते हैं?**

उत्तर- तीर्थंकरों के प्रायः पाँच कल्याणक होते हैं।

प्रश्न.4 **तीर्थंकर कितने होते हैं?**

उत्तर- तीर्थंकर चौबीस होते हैं।

प्रश्न.5 **चौबीस तीर्थंकरों के चिन्ह सहित नाम बताओ?**

उत्तर- ऋषभ नाथ के बैल बोलो, अजितनाथ के हाथी।
संभवनाथ के घोड़ा बोलो, अभिनन्दन के बंदर।।
सुमतिनाथ का चकवा बोलो, पद्म प्रभ के लाल कमल।
सुपार्श्वनाथ का सँथिया बोलो, चन्द्रप्रभ के चन्द्रमा।।
पुष्पदंत के मगर बोलो, शीतलनाथ के कल्पवृक्ष।
श्रेयांसनाथ के गेंडा बोलो, वासपूज्य के भैंसा।।
विमलनाथ के सूकर बोलो, अनन्तनाथ के सेही।
धर्मनाथ के वज्रदण्ड बोलो, शांतिनाथ के हिरण।।
कुंथुनाथ के बकरा बोलो, अरहनाथ की मछली।
मल्लिनाथ के कलश बोलो, मुनिसुव्रत नाथ के कछुआ।।
नमिनाथ के नील कमल है, नेमिनाथ के शंख।
पार्श्वनाथ के सर्प बड़ा है, महावीर स्वामी के शेर।।।

अध्याय-चार

मंगल पाठ

प्रश्न.1 **मंगल किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो पाप को गलाऐ और उत्तम सुख लाए उसे मंगल कहते हैं।

प्रश्न.2 **मंगल कितने होते हैं?**

उत्तर- मंगल चार होते हैं।

प्रश्न.3 **चार मंगलों के नाम बताओ?**

उत्तर- पहले- अरिहंत जी, दूसरे- सिद्ध जी, तीसरे- साधु जी, चौथे- जिन धर्म

प्रश्न.4 **मंगल पाठ को सुनाओ?**

उत्तर- चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं।
सिद्ध मंगलं, साहु मंगलं।
केवलि पण्णत्तो, धम्मो मंगलं।।

प्रश्न.5 **इस मंगल पाठ का अर्थ भी सुनाओ?**

उत्तर- मंगल चार होते हैं। अरिहन्त भगवान मंगल हैं।
सिद्ध भगवान मंगल हैं, साधु भगवान मंगल हैं।।
केवलि भगवान द्वारा कहा गया, जिनधर्म भी मंगल है।।।
विशेषः- (साधु मंगल में आचार्य, उपाध्याय व साधु तीनों परमेष्ठीयों का समावेश है।)

अध्याय-पाँच

उत्तम शरण

प्रश्न.1 **उत्तम किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो लोक में सर्वश्रेष्ठ हो, उसे उत्तम कहते हैं।

प्रश्न.2 **उत्तम के पाठ को शुद्ध रूप में सुनाओ?**

उत्तर- चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा।
सिद्ध लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा।।
केवलि पण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमा।।।

प्रश्न.३ **लोगुत्तमा पाठ का अर्थ बताओ?**

उत्तर- लोक में चार उत्तम होते हैं।
अरिहंत भगवान उत्तम हैं, सिद्ध भगवान उत्तम हैं।
साधु (आचार्य, उपाध्याय व साधु) लोक में उत्तम हैं।।
केवलि भगवान द्वारा प्रणीत जिन धर्म लोक में उत्तम है।।।

प्रश्न.4 **शरण किसे कहते हैं?**

उत्तर- जिनका आश्रय लेने से हमारी आत्मा की पापों से रक्षा होती है, उसे शरण कहते हैं। ये शरण भी मंगल व उत्तम की तरह चार होती है।

प्रश्न.5 **शरण के पाठ को अर्थ सहित सुनाओ?**

उत्तर- चत्तारि सरणं पव्वज्जामि- मैं चार की शरण में जाता हूँ।
अरिहन्त सरणं पव्वज्जामि- मैं अरिहन्त भगवान की शरण में जाता हूँ। सिद्ध सरणं पव्वज्जामि- मैं सिद्ध भगवान की शरण में जाता हूँ। साहु सरणं पव्वज्जामि- मैं साधु भगवान की शरण में जाता हूँ। केवलि पण्णत्तो धम्मोसरणं पव्वज्जामि- मैं केवली प्रणीत जिनधर्म की शरण में जाता हूँ।

अध्याय-छह

जीव-अजीव

प्रश्न.1 **जीव किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो जीता था, जीता है, जीवेगा वह जीव है अथवा जिसमें चेतना हो वह जीव है, 'अथवा' जो चलता है, खाता है, पीता है, श्वांस लेता है वह जीव है।

प्रश्न.2 **जीव के कितने भेद हैं, और कौन-कौन से हैं?**

उत्तर- जीव के मुख्य दो भेद हैं। प्रथम संसारी जीव और दूसरे मुक्त जीव।

प्रश्न.3 **संसारी जीव के कितने व कौन-कौन से भेद हैं।**

उत्तर- संसारी जीव के मुख्य दो भेद हैं। प्रथम त्रस और दूसरे स्थावर।

प्रश्न.4 **त्रस व स्थावर जीव किसे कहते हैं?**

उत्तर- जिन जीवों के दो या दो से अधिक इन्द्रियाँ पाई जाती हैं वे त्रस जीव है, जिनके मात्र एक स्पर्शन इन्द्रिय होती है वे स्थावर जीव होते हैं।

प्रश्न.5 **अजीव किसे कहते हैं, इनके मुख्य भेद कितने व कौन-कौन से हैं?**

उत्तर- जिसमें चेतना नहीं हो या जो जीता नहीं है वह अजीव है। अजीव के मुख्य पाँच भेद होते हैं। प्रथम- पुद्गल द्रव्य
दूसरा- धर्मद्रव्य, तीसरा- अधर्म द्रव्य, चौथा- आकाश द्रव्य, पाँचवा- काल द्रव्य।

अध्याय-सात

संसारी जीव

प्रश्न.1 **संसारी जीव के कितने व कौन-कौन से भेद हैं?**

उत्तर- संसारी जीव के पाँच भेद होते हैं।
प्रथम- एक इन्द्रिय जीव, दूसरे- दो इन्द्रिय जीव, तीसरे - तीन इन्द्रिय जीव, चौथे- चार इन्द्रिय जीव, पाँचवे- पाँच इन्द्रिय जीव।

प्रश्न.2 **एक इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं? उदाहरण देकर बताओ?**

उत्तर- जिन जीवों के मात्र एक स्पर्शन इन्द्रिय हो, वे एक इन्द्रिय जीव होते हैं। इनके पाँच भेद होते हैं।
उदाहरण- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति।

प्रश्न.3 **दो इन्द्रिय जीव किसे कहते हैं?उदाहरण देकर बताओ?**

उत्तर- जिनके स्पर्शन व रसना दो इन्द्रिय हों, वे दो इन्द्रिय जीव होते हैं। जैसे- लट, केंचुआ, गिजाई, शंख आदि।

प्रश्न.4 **तीन इन्द्रिय जीव व चार इन्द्रिय जीव के बारे में भी बताओ?**

उत्तर- जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण ये तीन इन्द्रियाँ हो वे तीन इन्द्रिय जीव होते हैं। जैसे- चींटी, चींटा, खटमल, जूँआ, लीक, कुंथु, देहिक आदि। जिन जीवों के स्पर्शन, रसना घ्राण, चक्षु ये चार इन्द्रियाँ होती हैं, वे चार इन्द्रिय जीव होते हैं। जैसे- मक्खी, मच्छर, तितली, भौंरा, डाँस, बर्र आदि।

प्रश्न.5 **पाँच इन्द्रिय जीवों का मुख्य भेद सहित वर्णन करो?**

उत्तर- जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु व कर्ण ये इन्द्रियाँ हों, वे जीव पंचेन्द्रिय होते हैं। जैसे- देव, नारकी, मनुष्य, शेर घोड़ा, हाथी, चूहा, बिल्ली आदि। पंचेन्द्रिय के संज्ञी व असंज्ञी ये दो भेद होते हैं।

अध्याय-आठ

इन्द्रियाँ

प्रश्न.1 **इन्द्रिय किसे कहते हैं?**

उत्तर- जिससे संसारी जीव की पहचान होती है, उसे इन्द्रिय कहते हैं।

प्रश्न.2 **इन्द्रियाँ कितनी व कौन-कौन सी होती हैं, नाम बताओ?**

उत्तर- इन्द्रियाँ पाँच होती हैं। प्रथम-स्पर्शन, दूसरी-रसना, तीसरी-घ्राण, चौथी-चक्षु, पाँचवीं-कर्ण।

प्रश्न.3 **क्या ये पाँचों इन्द्रियाँ क्रम से ही होती हैं?**

उत्तर- हाँ पाँचों इन्द्रियाँ क्रम से ही होती हैं, कभी भी अक्रम से नहीं होती तथा कभी भी कोई इन्द्रिय अन्य इन्द्रिय का काम भी नहीं करती ।

प्रश्न.4 **इन पाँचों इन्द्रियों की परिभाषा बताओ?**

उत्तर- जिस इन्द्रिय से वस्तु का छू कर ज्ञान हो वह स्पर्शन इन्द्रिय है, जिस इन्द्रिय से वस्तु का चख कर ज्ञान हो वह रसना इन्द्रिय है। जिस इन्द्रिय से वस्तु का सूँघ कर ज्ञान हो वह घ्राण इन्द्रिय है। जिस इन्द्रिय से वस्तु का आँखों द्वारा देख कर ज्ञान हो वह चक्षु इन्द्रिय है। जिस इन्द्रिय से वस्तु के शब्दों को सुनकर ज्ञान हो वह कर्ण इन्द्रिय है।

प्रश्न.5 **इस अध्याय को पढ़ कर हमें क्या शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए?**

उत्तर- हमें एक इन्द्रिय से लेकर पंच इन्द्रिय तक के सभी जीवों की रक्षा करनी चाहिए। तथा अपनी इन्द्रियों का कभी दुरुपयोग भी नहीं करना चाहिए।

अध्याय-नौ

सच्चे देव

प्रश्न.1 **सच्चे देव किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो वीतरागी, सर्वज्ञ व हितोपदेशी हों, उन्हें सच्चे देव कहते हैं।

प्रश्न.2 **वीतरागी किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो रागद्वेष आदि अट्ठारह (18) दोषों से रहित हों, उन्हें ही वीतरागी कहते हैं।

प्रश्न.3 **सर्वज्ञ किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो तीन लोक व अलोकाकाश सम्बन्धी तीन काल की समस्त बातों को जानते हैं, वे सर्वज्ञ होते हैं।

प्रश्न.4 **हितोपदेशी किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो बिना किसी इच्छा के भव्य जीवों को कल्याण का उपदेश देते हैं, वे हितोपदेशी कहलाते हैं।

प्रश्न.5 **सच्चे देव की पूजा भक्ति, उपासना व दर्शन करने से क्या लाभ होता है?**

उत्तर- सच्चे देव की पूजा, भक्ति, उपासना व दर्शन करने से पाप कर्मों का नाश होता है, जीवन में सुख-शान्ति मिलती है, अपरिमित वैभव की प्राप्ति एवं समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होती है तथा परम्परा से मोक्ष की प्राप्ति होती है। अर्थात पूजा करने से हम भी एक दिन भगवान बन जायेंगे।

अध्याय-दस

शान्तिनाथ भगवान की स्तुति

जय शान्तिनाथा, जय शान्तिनाथाl

चरणों में तेरे नवाऊँ मैं माथाll

जय शान्तिनाथा, जय शान्तिनाथाl

चरणों में तेरे नवाऊँ मैं माथाll

जो कोई आवे तेरी शरण मेंl

वो ना फँसे कभी जग के भ्रमण मेंll

शान्ति करो नाथ शान्ति के दाताl

चरणों में तेरे नवाऊँ मैं माथाll

जय..... ll

(भाग -द्वितीय)

अध्याय-एक (प्रार्थना)

दयालु प्रभु से हम दया माँगते हैं।
अपने दुःखों की हम दवा माँगते हैं।।

1. **नहीं हम सा कोई अधम और पापी।**
सत्कर्म हमने ना किये हैं कदापि।।
किये नाथ हमने हैं अपराध भारी।
उनकी हृदय से हम क्षमा माँगते हैं।।
दयालु ....।।।

2. **प्रभु तेरी भक्ति में मन ये मगन हो।**
निजातम चिंतन की हरदम लगन हो।।
मिले सत्य संयम करें आत्म चिंतन।
वरदान भगवन ये सदा मांगते हैं।।
दयालु ....।।।

3. **दुनियाँ के भोगों की ना कुछ कामना है।**
स्वर्ग के सुखों की ना कुछ चाहना है।।
यही एक आशा है बन जायें प्रभु से।
शिवराम पैसा ना टका माँगते हैं।।

अध्याय-दो

देव दर्शन

प्र.1 **देव दर्शन किसे कहते हैं?**

उत्तर- सच्ची श्रद्धापूर्वक जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करने को ही देव दर्शन कहते हैं।

प्र.2 **देव दर्शन किसे कब जाना चाहिये?**

उत्तर- प्रातःकाल स्नान करके, शुद्ध वस्त्र पहनकर, हाथों में पूजन की सामग्री लेकर देव दर्शन के लिए जाना चाहिये, इसके अलावा दोपहर में व शाम को भी देव दर्शन के लिए जाना चाहिये।

प्र.3 **देव दर्शन करने से क्या लाभ है?**

उत्तर- देव दर्शन से पाप कर्म नष्ट हो जाते है, हमें भी भगवान बनना है'' यह लक्ष्य भी हमें याद रहता है और देव दर्शन करने से आत्मशांति मिलती है।

प्र.4 **देव दर्शन कैसे करना चाहिये?**

उत्तर- सबसे पहले मंदिर जी को सिर झुकाना चाहिय, देहरी पर माथा टेकें,निःसहि- निःसहि-निःसहि तीन बार बोलें, घण्टा बजायें, ऊँ जय-जय-जय, नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु बोलें, वेदी की तीन परिक्रमा लगायें, चावल चढ़ायें, गंधोदक माथे से लगाये, कायोत्सर्ग करें, भगवान के दर्शन कर गवासन से नमोस्तु करें, शास्त्र जी को, महाराज श्री को भी चावल चढ़ाकर नमोस्तु करना चाहिये तथा अस्सहि-अस्सहि-अस्सहि कहते हुये वापिस अपने घर आ जायें।

प्र.5 **जिनेन्द्र दर्शन व जिनेन्द्र भगवान के गंधोदक की महिमा अर्थ सहित गाथा के माध्यम से सुनाओ?**

उत्तरः- ''जब चिंतो तब सहस फल, लक्खा फल गमणेय।
कोटा-कोटि अनंत फल, जब जिणवर दिट्ठेय।।''

अर्थः- जिनेन्द्र भगवान के दर्शन की भावना से हजारों उपवासों का ,गमन करते समय लाखों उपवासों का तथा दर्शन करने से अनंत करोड़ उपवासों का फल प्राप्त होता है।

''निर्मलं निर्मलीकरणं, पवित्रं पाप नाशकम्।
जिन गंधोदकं वंदे, पाप कर्म विनाशनम्।।''

अर्थः- यह गंधोदक पवित्र है, आत्मा को निर्मल बनाने वाला है, पापों का नाश करने वाला है, जिनेन्द्र भगवान के गंधोदक (अभिषेक के जल की) की वंदना करने से सभी पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं। इस गंधोदक की महिमा को हिन्दी के छंद में भी याद कर सकते हैं:-

''गंधोदक जिनराज का, गुण से भरा अनेक।
जो इसका वंदन करे, दुःख रहे ना एक।।
दुःख रहे ना एक, कोढ़ी निशदिन इसे लगावे।

अध्याय-तीन

परम रत्न

प्रश्न.1 **परम रत्न किसे कहते हैं?**

उत्तर- हमारी आत्मा को रत्न सदृश परम पवित्र बनाने वाले, विश्व के आराध्य सच्चे देव, शास्त्र व गुरुदेव ही परम रत्न हैं।

प्रश्न.2 **सच्चे देव का स्वरूप क्या है?**

उत्तर- जो वीतरागी हों, सर्वज्ञ हों, परम हितोपदेशी हों, घातिया कर्मों से अथवा समस्त कर्मों से रहित, अरिहंत व सिद्ध भगवान ही सच्चे देव हैं।

प्रश्न.3 **सच्चे शास्त्र का स्वरूप क्या है?**

उत्तर- जिनेन्द्र भगवान द्वारा कथित, गणधर परमेष्ठी द्वारा संग्रहित, दिगम्बर मुनियों द्वारा लिपिबद्ध शास्त्र ही सच्चे शास्त्र होते हैं। अथवा अहिंसा के प्रदायक, वीतरागता के पोषक, वस्तु के स्वरूप का अनेकान्त रूप में स्याद्वाद शैली में कथन करने वाले शास्त्र ही ,सच्चे शास्त्र होते हैं।

प्रश्न.4 **सच्चे गुरु का क्या स्वरूप है?**

उत्तर- जो दिगम्बर हों, विषय-कषाय, आरम्भ-परिग्रह से रहित हों, पिच्छी कमण्डलु व शास्त्र रखते हों, दाड़ीमूँछ व सिर के बालों का लोंच करते हों, एक बार खड़े होकर हाथों की अंजुलि बनाकर आहार (भोजन) करते हों, पैदल विहार करते हों, निरन्तर ज्ञान-ध्यान-तप में लीन रहते हों, वे ही हमारे सच्चे गुरू हैं।

प्रश्न.5 **सच्चा धर्म क्या है, जिससे आत्मा का कल्याण संभव हो?**

उत्तर- जो धर्म हमें संसार के दुःखों से निकालकर उत्तम सुख में पहुँचाये वही सच्चा धर्म है। अहिंसा ही परम धर्म है, आत्मा का कल्याण चाहने वाले विश्व के सभी प्राणियों को उसी धर्म की शरण लेनी चाहिए।

अध्याय-चार

धर्म का स्वरूप

प्रश्न.1 **धर्म का सही स्वरूप क्या है?**

उत्तर- जिस वस्तु का जो स्वभाव है, वही उसका धर्म है। जो आत्मा के स्वभाव हैं, वही आत्मा का निश्चय धर्म है।

प्रश्न.2 **निश्चय धर्म को प्राप्त कैसे करना चाहिए?**

उत्तर- व्यवहार धर्म के माध्यम से ही निश्चय धर्म की प्राप्ति होती है, बिना व्यवहार धर्म के कभी भी निश्चय धर्म की प्राप्ति नहीं हो सकती।

प्रश्न.3 **व्यवहार धर्म का स्वरूप क्या है?**

उत्तर- सभी दुःखों को नष्ट कर, सच्चे सुखों को देने वाला धर्म व्यवहार धर्म होताहै। वह अहिंसा रूप, रत्नत्रय रूप या दस धर्म रूप होता है।

प्रश्न.4 **अहिंसादि धर्म किसे कहते हैं?**

उत्तर- जीव हिंसादि पाँच पापों का मन, वचन, काय से त्याग करना अहिंसादि धर्म है।

प्रश्न.5 **रत्नत्रय या दस धर्म क्या है?**

उत्तर- सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान व सम्यक् चारित्र को ही रत्नत्रय कहते हैं तथा उत्तम क्षमा आदि दस लक्षणरूप ही दस धर्म

अध्याय-पाँच

पाप

प्रश्न.1 **पाप किसे कहते हैं?**

उत्तर- जिससे हमें अर्थात् संसारी प्राणियों को दुःख मिलता है, वही पाप है अथवा समस्त खोटे कार्य पाप ही हैं।

प्रश्न.2 **पाप के मुख्य कितने भेद हैं?**

उत्तर- पाप के मुख्य पाँच भेद हैं।

प्रश्न.3 **पाप के मुख्य पाँच भेद कौन-कौन से हैं?**

उत्तर- प्रथम-हिंसा, दूसरा-असत्य, तीसरा-चोरी, चौथा-कुशील और पाँचवा-परिग्रह।

प्रश्न.4 **इन पाँचों पापों की संक्षेप में परिभाषा बताओ?**

उत्तर- शरीर से, वाणी से या मन से किसी को कष्ट पहुँचाना हिंसा है। झूठ बोलने को असत्य कहते हैं। दूसरे की किसी भी वस्तु को बिना पूछे उठा लेना चोरी है। किसी स्त्री, पुरुष या नपुंसकों को देखकर गंदे विचार करना, गंदी बातें करना व गंदी क्रिया करना कुशील है। आवश्यकता से ज्यादा वस्तुऐं रखना अथवा पर वस्तु में आसक्त होना ही परिग्रह है।

प्रश्न.5 **इस अध्याय को पढ़ ने से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?**

उत्तर- इस अध्याय को पढ़ने से हमें शिक्षा मिलती है कि पाप करने से घोर दुःख मिलते हैं, इसलिए हमें कभी पाप नहीं करना चाहिए।

अध्याय-छह

भगवान महावीर

प्रश्न.1 **भगवान महावीर स्वामी के माता-पिता का नाम व चिन्ह क्या था?**

उत्तर- भगवान महावीर स्वामी की माता का नाम श्रीमती महारानी त्रिशला देवी, पिता का नाम श्रीमान राजा सिद्धार्थ था तथा चिन्ह सिंह का था।

प्रश्न.2 **भगवान महावीर स्वामी के पाँच नाम कौन-कौन से थे?**

उत्तर- भगवान महावीर स्वामी के पाँच नाम- वर्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर व महावीर थे।

प्रश्न.3 **भगवान महावीर स्वामी की आयु व शरीर की ऊँचाई कितनी थी?**

उत्तर- भगवान महावीर स्वामी की आयु 72 वर्ष व शरीर की ऊँचाई 7 हाथ थी।

प्रश्न.4 **भगवान महावीर स्वामी की कोई पाँच विशेषतायें बताओ?**

उत्तर-
1. ये बाल ब्रह्मचारी थे।
2. इनके ग्यारह गणधर थे।
3. इनके दादा का नाम सर्वार्थ व दादी का नाम श्रीमती था।
4. इनका छद्मस्थ काल बारह वर्ष था।
5. इनकी धर्म सभा में (समवशरण) में मुख्य गणधर इन्द्रभूति मुख्य आर्यिका चंदनवाला, तथा श्रोता राजा श्रेणिक थे।

प्रश्न.5 **भगवान महावीर स्वामी की पंच कल्याणकों की तिथियाँ बताओ?**

उत्तर-

गर्भ कल्याणक	-आषाढ़ सुदी षष्टी(6)
जन्म कल्याणक	-चैत सुदी तेरस (13)
दीक्षा (तप) कल्याणक	-मंगसिर वदी दसमी (10)
ज्ञान कल्याणक	-वैशाख सुदी दसमी (10)
मोक्ष (निर्वाण) कल्याणक	-कार्तिक वदी चतुर्दशी (14) की रात्रि या (30) अमावस

अध्याय-सात
गति

प्रश्न.1 **गति किसे कहते हैं? गति कितनी व कौन-कौन सी हैं?**

उत्तर- भव से भवान्तर की प्राप्ति का नाम गति है, ये चार होती हैंः-

1. मनुष्य गति
2. देव गति
3. तिर्यंचगति
4. नरक गति

प्रश्न.2 **मनुष्य गति किसे कहते हैं?**

उत्तर- मनुष्य की अवस्था में जिस कारण जन्म होता है, वह मनुष्य गति है, अथवा मनुष्य गति नाम कर्म को ही मनुष्य गति कहते हैं।

प्रश्न.3 **देव गति किसे कहते हैं?**

उत्तर- संसारी जीव का देव अवस्था में जिस कारण से जन्म होता है वह देवगति है।

प्रश्न.4 **तिर्यंच गति किसे कहते हैं? तिर्यंच जीव कौन-कौन से होते हैं?**

उत्तर- तिर्यंचों में जिस कारण से जन्म होता है, वह तिर्यंच गति होती है, एक इन्द्रिय से लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तक(मनुष्य,देव व नारकीयों को छोड़कर) सभी जीव नियम से तिर्यंच ही होते हैं, तथा संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच भी होते हैं। जैसे-निगोदियजीव,प्रथ्वीजल अग्निवायु वनस्पति,लट,चींटी,भौर शेर चीता आदि।

प्रश्न.5 **नरक गति किसे कहते हैं?**

उत्तर- जिस कारण से जीव का नारकी अवस्था में जन्म होता है, वह नरक गति है।

अध्याय-आठ
कषाय

प्रश्न.1 **कषाय किसे कहते हैं, और उसके मुख्य भेद कितने व कौन-कौन से हैं?**

उत्तर- जो आत्मा को कसे वह कषाय है, उसके मुख्य चार भेद हैंः-

1. क्रोध
2. मान
3. माया
4. लोभ

प्रश्न.2 **क्रोध कषाय किसे कहते हैं?**

उत्तर- गुस्सा करने को क्रोध कषाय कहते हैं। अति क्रोधी नरक में जन्म लेते हैं।

प्रश्न.3 **मान कषाय किसे कहते हैं?**

उत्तर- अंहकार करने को मान कषाय कहते हैं, मानी भी दुर्गति को प्राप्त होता है।

प्रश्न.4 **माया कषाय किसे कहते हैं?**

उत्तर- छल-कपट करने को माया कषाय कहते हैं। मायाचारी करने से जीव तिर्यंच गति में जन्म लेता है।

प्रश्न.5 **लोभ कषाय किसे कहते हैं?**

उत्तर- लालच करने को लोभ कषाय कहते हैं, लोभी व्यक्ति सदा दुःख पाता है, तथा लोभ के कारण ही समस्त पापों का जन्म होता है।

अध्याय-नौ

मेरा कर्तव्य/दैनिक चर्या

प्र.1 **प्रातःकाल सबसे पहले क्या करना चाहिये?**

उत्तर- प्रातःकाल जल्दी जागना चाहिये, जागते ही महामंत्र का नौ बार जाप करना चाहिये। माता-पिता के चरण छूना चाहिये एवं स्नान कर मंदिर जी जिन दर्शन करने जाना चाहिये।

प्र.2 **मंदिर किस प्रकार जाना चाहिये?**

उत्तर- शुद्ध वस्त्र पहन कर, चावल आदि उत्तम द्रव्य लेकर अच्छे भावों से जाना चाहिये। वहाँ जाकर भी श्रृद्धा व विनय पूर्वक भगवान के दर्शन करना चाहिये।

प्र.3 **भोजन कब और किस प्रकार का करना चाहिये?**

उत्तर- भोजन शुद्ध शाकाहारी, मर्यादित, प्रासुक, ताजा व सुपाच्य दिन में ही करना चाहिये, जिससे आलस नहीं आये, बुद्धि, बल, आरोग्य, सुख, शान्ति व आयु की वृद्धि हो।

प्र.4 **स्कूल में कैसे जायें व वहाँ क्या करना चाहिये?**

उत्तर- स्कूल में जाते समय अपने माता-पिता आदि पूज्य पुरुषों के चरण छूकर या जय जिनेन्द्र कर के जायें, अपना गृहकार्य पूरा करके ले जायें, अपना पाठ समय पर ही याद कर लेना चाहिये। विद्यालय में भी मन लगाकर पढ़ना चाहिये, अल्पकाल खेलना भी चाहिये।

प्र.5 **अच्छे श्रावक या गृहस्थ के और क्या-क्या कर्तव्य हैं?**

उत्तर- १. नित्य देव दर्शन करना।
२. रात्रि में भोजन नहीं करना।
३. जीवों पर दया करना।
४. छना हुआ जल पीना।
५. अभक्ष्य का त्याग करना आदि।

अध्याय-दस

देव दर्शन स्तुति

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरन आयो सरन जी।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेटो जामन मरन जी।।1।।

तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेती निज न जाण्यो, भ्रम गिण्यो हितकार जी।।2।।

भव विकट वन में करम बैरी, ज्ञान धन मेरो हरयो।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धर्‌त्यो फिर्‌यो।।3।।

धन घड़ी यों धन दिवस यों ही, धन जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु जी को लख लयो।।4।।

छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरैं।
वसु प्रतिहार्य अनंत गुण युत, कोटि रवि छवि को हरैं।।5।।

मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो उर हरष ऐसो भयो, मनु रंक चिन्तामणि लयो।।6।।

मैं हाथ जोड़ नवाऊँ मस्तक, वीनऊँ तुव चरण जी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारन तरन जी।।7।।

जाँचू नहीं सुरवास पुनि नर-राज परिजन साथ जी।
बुध जाचहूँ तुव भक्ति भव-भव, दीजिए शिवनाथ जी।।8

भाग -तृतीय

प्रार्थना

1. तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, हमें ना चैन पड़ती है।
छवि वैराग्य की तेरी, मेरी आँखों में फिरती है।।

2. निराभूषण विगत दूषण, पदम आसन मधुर भाषण।
नजर नैनों की नाशा से, अनी पर से गुजरती है।।

3. नहीं कर्मों का डर हम को, कि जब तक ध्यान चरणों में।
तेरे दर्शन से सुनते हैं, कर्म रेखा बदलती है।।

4. मिले गर स्वर्ग की सम्पदा, अचम्भा कौन सा इसमें।
तुम्हें जो नयन भर देखे, गति दुरगति की टलती है।।

5. हजारों मूर्तियाँ हमने, बहुत ही गौर कर देखीं।
शान्त मूरत तुम्हारी सी, नहीं नजरों में चढ़ ती है।।

6. जगत सरताज हो जिनराज, सेवक को दरश दीजे।
तुम्हारा क्या बिगड़ ता है, मेरी बिगड़ी सुधरती है।।

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, हमें ना चैन पड़ती है।
छवि वैराग्य की तेरी, मेरी आँखों में फिरती है।।

अध्याय-एक

श्रावक

प्रश्न.1 **श्रावक किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो श्रद्धावान, विवेकवान और क्रियावान हो, उसे श्रावक कहते हैं।

प्रश्न.2 **श्रावक के कितने मूलगुण होते हैं?**

उत्तर- श्रावक के आठ मूलगुण होते हैं।

प्रश्न.3 **श्रावक के आठ मूलगुण कौन-कौन से हैं?**

उत्तर- पाँच उदम्बर फल और तीन मकारों का त्याग करना।

प्रश्न.4 **पाँच उदम्बर फल कौन-कौन से हैं?**

उत्तर- 1. बड़ 2. पीपल 3. ऊमर 4. कठूमर 5. पाकर (अंजीर)
इन वृक्षों के फलों में असंख्यात जीव होते हैं,अतः इनका त्याग प्रत्येक श्रावक को करना चाहिए।

प्रश्न.5 **तीन मकार कौन-कौन से हैं? तथा इनका त्याग क्यों आवश्यक है?**

उत्तर- "म" अक्षर से प्रारम्भ होने वाले ये तीन पदार्थ महापाप के कारण हैं। (1) मद्य (शराब) मधु (शहद) माँस। इनका सेवन करने वाला धर्मात्मा ही नहीं है। धर्मात्मा को आत्मा का कल्याण करने के लिए इनका त्याग करना अति आवश्यक है।

अध्याय-दो

शलाका पुरूष

प्रश्न.1 **शलाका पुरुष किसे कहते हैं? व ये कितने होते हैं?**

उत्तर- उसी भव से या निकटतम भव में मोक्ष को प्राप्त करने वाले, पदवीधारी पुरुषों को शलाका पुरुष कहते हैं। इनकी संख्या तिरेसठ (63) होती है।

प्रश्न.2 **शलाका पुरुष तिरेसठ किस प्रकार होते हैं?**

उत्तर- चौबीस तीर्थंकर+बारह चक्रवती+नौ नारायण+नौ प्रति नारायण + नौ बलभद्र।

प्रश्न.3 **तीर्थंकर किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करते हैं, जिनके पंच कल्याण होते हैं, वे तीर्थंकर कहलाते हैं।

प्रश्न.4 **चक्रवर्ती किसे कहते हैं?**

उत्तर- जो छह खण्ड के राजा होते हैं, जिनके पास नौ निधि व चौदह रत्न हैं, महान वैभव व चक्ररत्न के धारी होते हैं वह चक्रवर्ती कहलाते हैं।

प्रश्न.5 **नारायण प्रतिनारायण व बलभद्र कौन हैं?**

उत्तर- जो अर्द्धचक्री, अर्थात् तीन खण्ड के स्वामी होते हैं, जिनके पास चक्र आदि सात रत्न होते हैं। जो आपस में एक-दूसरे के विरोधी होते हैं। प्रतिनारायण को मारकर नारायण अपना राज्य स्थापित करता है। नारायण के बड़े भाई बल-भद्र होते हैं, इनके पास पांच रत्न होते हैं।

अध्याय-तीन

सम्यक् रत्नत्रय

प्रश्न.1 रत्नत्रय किसे कहते हैं?

उत्तर- सम्यक दर्शन, सम्यक् ज्ञान व सम्यक चारित्र को ही रत्नत्रय कहते हैं। यही (इन तीनों की एकता ही) मोक्ष का मार्ग है।

प्रश्न.2 रत्नत्रय के कितने व कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर- रत्नत्रय के मोक्षमार्ग के आधार से दो भेद हैं:-
प्रथम- व्यवहार रत्नत्रय द्वितीय-निश्चय रत्नत्रय।

प्रश्न.3 व्यवहार रत्नत्रय किसे कहते हैं?

उत्तर- सम्यक् दर्शन, सम्यग्ज्ञान व सम्यक चारित्र का व्यवहार से परिपालन करना अथवा भेद अवस्था में ग्रहण करना व्यवहार या भेद रत्नत्रय है।

प्रश्न.4 निश्चय रत्नत्रय किसे कहते हैं?

उत्तर- सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र तीनों की एकता या अभेद अवस्था ही निश्चय रत्नत्रय है, यह निर्विकल्प ध्यान के समय में ही मात्र मुनियों के होता है।

प्रश्न.5 सम्यक् दर्शन, ज्ञान व चारित्र की परिभाषाएं बताओ?

उत्तर- सच्चे देव, शास्त्र, गुरु व जिन धर्म के प्रति या निजात्मा के प्रति यथार्थ-श्रद्धान करना ही सम्यक् दर्शन है। सम्यक् दर्शन के अविनाभावी तत्वों का ज्ञान अथवा सच्चा ज्ञान ही सम्यक्ज्ञान है। पापों को छोड़कर अहिंसादि व्रतों का पालन करना ही सम्यक् चारित्र है।

अध्याय- चार
कर्म भूमि व भोगभूमि

प्रश्न.1 **कर्मभूमि किसे कहते हैं?**

उत्तर- जहाँ पर मानव षट्कर्म का पालन करता है एवं षट् धार्मिक कर्तव्यों का पालन कर आत्म कल्याण को प्राप्त करते हैं, उस क्षेत्र को कर्म भूमि कहते हैं।

प्रश्न.2 **भोगभूमि किसे कहते हैं?**

उत्तर- जहाँ पर मनुष्य या पशु दीर्घकाल तक दश प्रकार के कल्प वृक्षों से उत्तम-उत्तम भोगों को प्राप्त करते हैं, वह भोगभूमि है। इसके उत्तम, मध्यम व जघन्य की अपेक्षा से तीन भेद होते हैं।

प्रश्न.3 **दश प्रकार के कल्प वृक्ष कौन-कौन से होते हैं?**

उत्तर- 1. गृहांग 2. भोजनांग 3. वस्त्रांग
4. भूषणांग 5. मालागं 6. पानांग
7. तूर्यांग 8. वाद्यांग 9. ज्योतिरांग
10. मद्यांग

प्रश्न.4 **षट् कर्म कौन-कौन से होते हैं?**

उत्तर- 1. असि 2. मसि
3. कृषि 4. वाणिज्य
5. शिल्प 6. कला

इनका प्रथमतः उपदेश ऋषभदेव भगवान ने राज्य अवस्था में दिया था।

प्रश्न.5 **कर्मभूमि व भोगभूमि की कुल संख्या कितनी है?**

उत्तर- ढाई द्वीप में ही कर्मभूमि व भोगभूमि होती है। कर्मभूमि पन्द्रह (जम्बूद्वीप में ३+धात की खण्ड द्वीप में 6+पुष्कारार्ध द्वीप में 6) एवं भोगभूमि तीस (जम्बूद्वीप में 6+ धात की खण्ड में 12+पुष्करार्ध द्वीप में 12 हैं।)

अध्याय- पाँच
षट्काल

प्रश्न.1 **जिनागम के अनुसार छह काल कौन-कौन से हैं?**

उत्तर-1. सुखमा-सुखमा 2. सुखमा 3 सुखमा-दुःखमा
4. दुःखमा-सुःखमा 5. दुःखमा 6. दुःखमा-दुःखमा

प्रश्न.2 **क्या ये छह काल प्रत्येक क्षेत्र में होते हैं? यदि नहीं तो कहाँ नहीं होते?**

उत्तर- ये छह काल भरत और ऐरावत क्षेत्र में होते हैं, अर्थात इन दोनों स्थानों पर क्रमशः काल परिवर्तन होता रहता है। इसके अतिरिक्त अन्य कहीं भी काल परिवर्तन नहीं होता, जहाँ जो काल है वहाँ वही काल सदैव रहता है।

प्रश्न.3 **कहाँ-कहाँ पर कौन-कौन सा काल रहता है?**

उत्तर- हैमवत एवं हैरण्यवत् क्षेत्र में सदैव तृतीय काल (सुखमा-सुखमा) ही रहता है। हरिक्षेत्र व रम्यक क्षेत्र में सदैव द्वितीय काल (सुखमा) ही रहता है, देव कुरु व उत्तर कुरु में सदैव प्रथम काल (सुखमा-सुखमा) ही रहता है। विदेह क्षेत्र में सदैव चतुर्थ काल(दुःखमा-सुखमा) ही रहता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रों में भी काल परिवर्तन जानना चाहिए।

प्रश्न.4 **भोगभूमि व कर्मभूमि के कौन-कौन से काल होते हैं?**

उत्तर- प्रथम (सुखमा-सुखमा) द्वितीय (सुखमा) तृतीय (सुखमा-दुःखमा) ये तीन काल क्रमशः उत्तम, मध्यम व जघन्य भोग -भूमि के रहते हैं तथा चतुर्थ (दुःखमा-सुखमा) पंचम (दुःखमा) षष्टम (दुःखमा-दुःखमा) ये तीनों काल क्रमशः उत्तम, मध्यम व जघन्य कर्मभूमि के होते हैं।

प्रश्न.5 **वर्तमान काल में इस क्षेत्र में कौन सा काल चल रहा है?**

उत्तर- वर्तमान काल में इस क्षेत्र में (भरत क्षेत्र में) पंचमकाल (दुःखमा काल) चल रहा है। इसे कलि काल भी कहते हैं, यह काल अपने नाम के अनुसार ही दुखप्रद भी है।

अध्याय- छः

तत्वज्ञान

प्रश्न.1 **तत्व किसे कहते हैं?**

उत्तर- वस्तु के स्वभाव को तत्व कहते हैं, जिस वस्तु का जो स्वभाव है, वही उस वस्तु का तत्व है। जैसे- जल का स्वभाव शीतलता, अग्नि का उष्णता, दाहकता, तेजस्विता। नीम का स्वभाव कड़वापन, शक्कर का मिठास युक्त आदि।

प्रश्न.2 **तत्व कितने होते हैं, और कौन-कौन से नाम बताओ?**

उत्तर- तत्व अनंत होते हैं, क्योंकि संसार में अनंत पदार्थ हैं और उनके अनंत स्वभाव हैं। इसलिए तत्व अनंत होते है, किन्तु आत्म कल्याण हेतु प्रयोजनभूत तत्व सात होते हैं, उनके नाम हैं:- १. जीव, २. अजीव, ३. आस्रव, ४. बंध, ५. संवर, ६. निर्जरा, ७. मोक्ष।

प्रश्न.3 **संसार के कारणभूत कौन-कौन से तत्व हैं और क्यों?**

उत्तर- संसार के कारणभूत तत्व- अजीव, आस्रव और बंध हैं, क्योंकि जीव, अजीव के साथ जब राग-द्वेष करता है तब नियम से कर्मों का आस्रव होता है, आस्रव के साथ नियम से कर्मों का बंध भी करता है, कर्मों से बंधा हुआ जीव नियम से संसार में परिभ्रमण करता है।

प्रश्न.4 **मोक्ष के कारणभूत कौन-कौन से तत्व हैं और क्यों?**

उत्तर- मोक्ष के कारणभूत तत्व- जीव, संवर, निर्जरा हैं, क्योंकि जीव अपने स्वभाव को जानकर पापों को छोड़कर जब संयमी बनता है तब संवर, निर्जरा के द्वारा समस्त कर्मों का क्षय कर मोक्ष प्राप्त करता है।

प्रश्न.5 **सात तत्वों की संक्षेप में परिभाषा बताओ?**

उत्तर- 1. जीवः- जो चेतना से युक्त हो, वह जीव है।
2. अजीवः- जो चेतना से रहित हो, वह अजीव है।
3. आस्रवः- कर्मों के आने के कारण को आस्रव कहते हैं।
4. बंधः- आत्म प्रदेशों का कर्मों के साथ दूध व पानी की तरह एकमेक हो जाना बंध है।
5. संवरः- आते हुए कर्मों को रोक देना संवर तत्व है।
6. निर्जराः- पूर्व बद्ध कर्मों का एक देश क्षय होना निर्जरा तत्व है।
7. मोक्षः- आत्मा से समस्त कर्मों का पूर्ण रूप से अलग हो जाना ही मोक्ष है।

अध्याय- सात

समवशरण

प्रश्न.1 **समवशरण किसे कहते हैं?**

उत्तर- तीर्थंकर प्रभु की धर्म सभा को समवशरण कहते हैं। अथवा जहाँ पर संसारी प्राणियों को बिना राग-द्वेष, बैर-भाव/अपेक्षा या उपेक्षा के समान रूप से शरण प्राप्त हो, उसे समवशरण कहते हैं।

प्रश्न.2 **समवशरण में कितनी सभाऐं होती हैं, और उनमें कौन-कौन विराजमान होता है?**

उत्तर- समवशरण में बारह सभाऐं (कोष्ठ) होती हैं, जिनमें क्रमशः भव्य जीव विराजमान होते हैं। प्रथम कोष्ठ या सभा में- निर्ग्रंथ मुनि, द्वितीय में कल्पवासी देवियाँ तृतीय में- आर्यिकायें, चतुर्थ में- ज्योतिषी देवियाँ, पंचम में- व्यतंर देवियाँ, षष्टम में- भवनवासी देवियाँ, सप्तम में भवनवासी देव, अष्टम में ज्योतिषिदेव, नवम में- व्यंतर देव, दसवें में- कल्पवासी देव, ग्यारहवें में- मनुष्य एवं बारहवें में- पशु (तिर्यंच) विराजमान रहते हैं।

प्रश्न.3 **समवशरण में कितनी भूमियाँ होती हैं?**

उत्तर- समवशरण में आठ भूमियाँ होती हैं:-

1.	चैत्य प्रसाद भूमि	2.	खातिका भूमि
3.	लता भूमि	4.	उपवन भूमि
5.	ध्वजा भूमि	6.	कल्पवृक्ष भूमि
7.	गृहांग (भवन) भूमि	8.	श्री मण्डप भूमि

प्रश्न.4 **समवशरण में कितने प्रकार की और कौन-कौन सी ध्वजायें होती हैं?**

उत्तर- समवशरण में दस प्रकार की ध्वजायें होती हैं वे निम्न प्रकार के चिन्हों से सहित होती हैं:- 1. माला, 2. सिंह, 3. कमल, 4. वस्त्र, 5. गरूड़, 6. हाथी, 7. बैल, 8. चकवा, 9. मयूर, 10. हंस।

प्रश्न.5 **समवशरण में श्री जिनेन्द्र भगवान के समीप विराजमान अष्ट प्रतिहार्य व अष्ट मंगल द्रव्य कौन-कौन से हैं, नाम बताओ?**

उत्तर- 1. सिंहासन 2. भामण्डल 3. छत्रत्रय 4. अशोक वृक्ष 5. पुष्पवृष्टि 6. देवदुंदभि 7. दिव्य ध्वनि 8. चमर ढुरना

ये आठ प्रतिहार्य हैं।

1. झारी	2. पंखा	3. कलश	4. ध्वजा
5. स्वस्तिक	6. छत्र	7. दर्पण	8. चमर

ये आठ मंगल द्रव्य हैं।

अध्याय- आठ

अजीव द्रव्य

प्रश्न.1 द्रव्य किसे कहते हैं?

उत्तर- गुण और पर्यायों के समूह को द्रव्य कहते हैं, अथवा जिसमें उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यता पाई जाये उसे द्रव्य कहते हैं, अथवा जिसकी संसार में सत्ता है, वह द्रव्य है।

प्रश्न.2 द्रव्य के मुख्य कितने व कौन-कौन से भेद है?

उत्तर- द्रव्य के मुख्य दो भेद हैं:- १. जीव द्रव्य २. अजीव द्रव्य

प्रश्न.3 अजीव द्रव्य के कितने और कौन-कौन से भेद हैं?

उत्तर- अजीव द्रव्य के पाँच भेद हैं:-

1. पुदगल द्रव्य, 2. धर्म द्रव्य
3. अधर्म द्रव्य 4. आकाश द्रव्य
5. काल द्रव्य

प्रश्न.4 छह द्रव्यों की संक्षेप में परिभाषा बताओ?

उत्तर- जीवः- जिसमें चेतना पाई जाती है, वह जीव है।

पुदगल द्रव्यः- जिसमें स्पर्श, रस, गंध व वर्ण पाया जाता है, वह पुदगल द्रव्य है।

धर्म द्रव्यः- जो चलते हुए जीव व पुदगलों को चलाने में सहकारी होता है, वह धर्म द्रव्य है, जैसे- मछलियों के लिए जल सहकारी होता है।

अधर्म द्रव्यः- जो ठहरे हुए जीव व पुदगलों को ठहराने में सहकारी होता है, वह अधर्म द्रव्य है। जैसे- राहगीर के लिए वृक्ष की छाया।

आकाश द्रव्यः- जो जीव आदि सभी द्रव्यों को अवगाहना या स्थान देता है, वह आकाश द्रव्य होता है।

काल द्रव्यः- जो सभी द्रव्यों के परिवर्तन में सहयोगी होता है, वह काल द्रव्य है।

प्रश्न.5 पंचास्ति काय कौन-कौन से होते हैं?

उत्तर- काल द्रव्य को छोड़कर शेष सभी द्रव्य अस्तिकाय कहलाते हैं। बहुप्रदेशी द्रव्यों को काय कहते हैं। काल बहुप्रदेशी नहीं है, इसलिए काल द्रव्य काय नहीं है। सभी द्रव्य अस्ति हैं, किन्तु काल द्रव्य को छोड़कर शेष पाँच काय भी हैं, अतः ये पाँच ही अस्तिकाय कहलाते हैं।

अध्याय- नौ

हमारे गुरु

प्रश्न.1 **हमारे गुरु कितने व कौन-कौन होते हैं?**

उत्तर- 1. अरिहंत, 2. सिद्ध, 3. आचार्य, 4. उपाध्याय, 5. साधु ये पाँच परमेष्ठी ही हमारे गुरु हैं अथवा अरिंहत व सिद्ध परमेष्ठी भगवान हैं और आचार्य, उपाध्याय व साधु परमेष्ठी, ये हमारे साक्षात् गुरु हैं।

प्रश्न.2 **सच्चे गुरु की क्या पहचान है?**

उत्तर-
1. जो यथाजात दिगम्बर हों।
2. पिच्छी, कमण्डल व शास्त्र के अतिरिक्त अन्य कोई अनावश्यक परिग्रह न रखते हों।
3. दिन में एकबार अपने हाथ की अंजुलि बनाकर खड़े-खड़े ही आहार लेते हों।
4. सिर, दाढ़ी व मूंछ के बालों का दो-तीन-चार माह में केशलोंच करते हों।
5. यावज्जीवन पैदल ही विहार करते हों। इत्यादि सच्चे गुरुओं की बाह्य पहचान है।

प्रश्न.3 **सच्चे गुरुओं के आंतरिक लक्षण क्या-क्या हैं?**

उत्तर-
1. जो पंचेन्द्रियों के विषयों से विरक्त हों।
2. जिन्होंने कषायों को जीता है, मंद किया है।
3. जो आरम्भ-परिग्रह से रहित हों।
4. जो हिंसादि सर्वपापों के त्यागी व महाव्रती हों।
5. जो ज्ञान-ध्यान व तप में लीन रहते हों।

प्रश्न.4 **सच्चे गुरु कितने मूलगुणों का पालन करते हैं?**

उत्तर- सच्चे गुरु (आचार्य, उपाध्याय, साधु) क्रमशः अट्ठाईस, पच्चीस व छत्तीस मूलगुणों का पालन करते हैं। अट्ठाईस मूलगुणों का पालन तो सभी साधु करते ही हैं, चाहे वे आचार्य हों या उपाध्याय या साधु परमेष्ठी पाँच महाव्रत+पाँच समिति+पाँच इन्द्रिय निरोध+ छह आवश्यक+सात विशेष गुण।

प्रश्न.5 **सच्चे गुरुओं की सेवा भक्ति करने से किस फल की प्राप्ति होती है।**

उत्तर- सच्चे गुरुओं की सेवा भक्ति करने से शुभास्रव, सातिशय पुण्य का बंध, पाप कर्मों (अशुभ आस्रव का निरोध) का संवर, पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा, चारित्र की प्राप्ति एवं परम्परा से मोक्षरूपी फल की प्राप्ति होती है।

अध्याय- दस

प्रार्थना

प्रातः काल तुम जल्दी जागो।
आलस छोड़ो, निद्रा त्यागो।। 1।।
महामंत्र का जाप करो तुम।
पाप कर्म से सदा डरो तुम।। 2।।
अपना पाठ याद नित करना।
दीन दुःखी की पीड़ा हरना।। 3।।
छने हुए जल से ही नहाना।
रोज सवेरे मंदिर जाना।। 4।।
मात-पिता के छूना पैर।
रखो किसी से कभी न बैर।। 5।।
कभी किसी को नहीं सताना।
झूँठ किसी को नहीं बताना।। 6।।
महापाप चोरी से बचना।
पर स्त्री संग कभी न करना।। 7।।
परिग्रह ज्यादा कभी न जोड़ो।
और कषायों को भी छोड़ो।। 8।।
देवशास्त्र, गुरु को ध्याओ।
सदाचार नित अपनाओ।। 9।।
करि सेवा इंसान बनो तुम।
भक्ति करि भगवान बनो तुम।। 10।।

भाग-4

अध्याय - 1 प्रार्थना

हे प्रभु आंनद दाता, ज्ञान हमको दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिये।।

लीजिये हमकों शरण में, हम सदाचारी बनें
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक, वीर व्रतधारी बनें।।

जैन में पैदा हुये हम, जैन की संतान हैं।
धर्म की रक्षा करें, आशीष हमको दीजिये।।
हे प्रभु आंनद दाता, ज्ञान हमको दीजिये।

देव शास्त्र गुरू देव जितने, सामने मेरे रहें।
नित्य उनकी करें सेवा, आशीष हमको दीजिये।।
हे प्रभु आनंद दाता, ज्ञान हमको दीजिये।

मानव जन्म पा, हम सभी सद्मार्ग में बढ़ ते रहें।
हो समाधि मरण मेरा, आशीष हमको दीजिये।।
हे प्रभु आनंद दाता, ज्ञान हमको दीजिये।

अध्याय - 2

अनुयोग चर्चा

प्र.1 **अनुयोग किसे कहते हैं?**

उ०. जिनवाणी मुख्य रूप से चार भागों में वर्णित है, वे चार भाग ही चार अनुयोग हैं अथवा जिनवाणी केअध्ययन हेतु जो क्रमिक भेद, आचार्यों द्वारा वर्णित हैं वही अनुयोग है।

प्र.2 **अनुयोग के कितने व कौन-कौन से भेद हैं ?**

उ०. अनुयोग के चार भेद हैं:-

१. प्रथमानुयोग २. करणानुयोग ३. चरणानुयोग ४. द्रव्यानुयोग ।

प्र.3 **प्रथमानुयोग किसे कहते हैं, उदाहरण देकर बताओ ?**

उ०. जिन शास्त्रों में महापुरूषों के जीवन चरित्र का वर्णन है, उन शास्त्रों को प्रथमानुयोग के शास्त्र कहते हैं जैसे- आदिपुराण, हरिवंश पुराण, पद्म पुराण, प्रद्युम्न चरित्र, श्रेणिक चरित्र, सुदर्शन चरित्र आदि ।

प्र.4 **करणानुयोग किसे कहते हैं, इस अनुयोग के कौन-कौन से शास्त्र हैं ?**

उ०. जिन शास्त्रों में करण अर्थात जीव के परिणामों का कथन हो, तीन लोक के संस्थान का, षट्काल परिवर्तन का कथन हो, वे करणानुयोग के शास्त्र होते हैं। जैसे-षट्खण्डागम, कषायपाहुड़, महाबंधो, तिलोय पण्णत्ति, त्रिलोकसार, गोम्मटसार, लब्धिसार इत्यादि।

प्र.5 **चरणानुयोग व द्रव्यानुयोग के सम्बन्ध में बताओं ?**

उ०. जिन शास्त्रों में श्रावक व मुनिराजों के आचरण का कथन हो वे चरणानुयोग के शास्त्र कहलाते हैं। जैसे- सभी श्रावकाचार, मूलाचार आदि तथा जिन शास्त्रों में द्रव्य की शुद्ध अवस्था का कथन होता है वे द्रव्यानुयोग के शास्त्र होते हैं, जैसे- द्रव्यसंग्रह, पंचास्तिकाय, परमात्म प्रकाश, समयसार आदि।

अध्याय - 3

पंच कल्याणक

प्र.1 **कल्याणक किसे कहते हैं? तथा ये कितने होते हैं?**

उ०. तीर्थंकर प्रभु के गर्भ, जन्म आदि अत्यंत महिमाशाली महोत्सव जो देव और मनुष्यों द्वारा सम्पन्न होते हैं, वे कल्याणक कहलाते हैं। क्योंकि इन महोत्सवों से संसारी प्राणी कल्याण की प्रेरणा प्राप्त करते हैं। ये कल्याणक पांच हैं, वे इस प्रकार हैं:-

१. गर्भ कल्याणक २. जन्म कल्याणक ३. तप या दीक्षा कल्याणक
४. ज्ञान कल्याणक ५. मोक्ष या निर्वाण कल्याणक।

प्र.2 **गर्भ कल्याणक किसे कहते हैं?**

उ०. तीर्थंकर प्रभु के गर्भ सम्बन्धी महोत्सव को गर्भ कल्याणक कहते हैं तीर्थंकर प्रभु जब माँ के गर्भ में आते हैं तब जिनेन्द्र जननी सोलह स्वप्न देखती हैं, सौधर्म इन्द्र तीर्थकर के माता-पिता की पूजा करने आता है, सभी देव और मनुष्य आकर उस महोत्सव को मनाते हैं।

प्र.3 **जन्म कल्याणक किसे कहते हैं?**

उ०. तीर्थंकर बालक के जन्म के समय मनुष्य व सौधर्म इन्द्र आदि देव जो जन्म का महोत्सव मनाते हैं, सुमेरू पर्वत पर क्षीर सागर के जल के एक हजार आठ कलशों से अभिषेक करते हैं तथा तीर्थकर बालक व उनके माता-पिता की पूजा करते हैं, यही जन्म कल्याणक महोत्सव कहलाता है।

प्र.4 **दीक्षा या तप कल्याणक किसे कहते हैं ?**

उ०. तीर्थंकर प्रभु को जब आत्मज्ञान व वैराग्य होता है, तब लौकान्तिक देव उनकी संस्तुति करने आते हैं, सौधर्म इन्द्र आदि देव समूह व नरेन्द्र समूह उनकी दीक्षा की अनुमोदना करते हैं उनकी महामहिम पूजा करते हैं, अत्यन्त आनंददायी महोत्सव मनाते हैं, जिससे अन्य प्राणी भी कल्याण को प्राप्त होते हैं यही दीक्षा कल्याणक कहलाता है।

प्र.5 **ज्ञान कल्याणक व मोक्ष कल्याण के बारे में भी कुछ बताने की कृपा करें ?**

उ०. तीर्थंकर भगवान जब चार घातिया कर्मों को नष्ट करके केवल ज्ञान को प्राप्त करते हैं, तब इन्द्र आदि देव, मनुष्य व तिर्यंच समूह महोत्सव मनाते हैं, वह महोत्सव ही ज्ञान कल्याणक होता है। जब तीर्थंकर भगवान समस्त अघातिया कर्मों को नष्ट करके मोक्ष प्राप्त करते हैं तब इन्द्रादि देव समूह मोक्ष/निर्वाण महोत्सव मनाते हैं, उसे ही मोक्ष कल्याणक कहते हैं।

अध्याय - 4

सम्यकत्व

प्र.1 **सम्यक्त्व/सम्यक् दर्शन किसे कहते हैं?**

उ०. सच्चे देव, शास्त्र, गुरु व जिनधर्म पर श्रद्धान करना ही सम्यक्त्व या सम्यक दर्शन है अथवा तत्वार्थों के यथार्थ श्रद्धान को सम्यक् दर्शन कहते हैं।

प्र.2 **सम्यक् दर्शन के कितने व कौन-कौन से लक्षण हैं ?**

उ०. सम्यक् दर्शन के चार लक्षण हैं:-

1. प्रशम, 2. संवेग, 3. अनुकम्पा, 4. आस्तिक्य।

प्र.3 **सम्यक् दर्शन के कितने व कौन से अंग होते हैं ?**

उ०. सम्यक् दर्शन के आठ अंग होते हैं:-

1. निशंकित अंग	2. निकांक्षित अंग
3. निर्विचिकित्सा अंग	4. अमूढदृष्टि अंग
5. उपगूहन अंग	6. स्थितिकरण अंग
7. वात्सल्य अंग	8. प्रभावना अंग

प्र.4 **सम्यक् दर्शन के कितने व कौन-कौन से अतिचार होते हैं ?**

उ०. सम्यक् दर्शन के पांच अतिचार होते हैं:-

1. शंका 2.कांक्षा 3.विचिकित्सा 4. अन्य दृष्टि संस्तव 5. अन्यदृष्टि प्रशंसा।

प्र.5 **सम्यक् दर्शन के कितने दोष होते हैं ?**

उ०. सम्यक् दर्शन के पच्चीस दोष होते हैं, शंकादि आठ दोष+ आठ मद+छह अनायतन+तीन मूढ़ता-पच्चीस दोष।

अध्याय - 5

सम्यक्ज्ञान

प्र.1 **सम्यक् ज्ञान किसे कहते हैं? इसके कितने व कौन-कौन से भेद हैं ?**

उ०. सम्यक् दर्शन के अविनाभावी ज्ञान को सम्यक् ज्ञान कहते हैं अथवा किसी भी वस्तु, तत्व का ज्यों का त्यों प्रतिपादन करने वाले ज्ञान को सम्यक् ज्ञान कहते हैं, इस ज्ञान के पांच भेद हैं:- मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनः पर्ययज्ञान, केवलज्ञान।

प्र.2 **मतिज्ञान किसे कहते हैं? तथा इसके कुल कितने भेद होते हैं ?**

उ०. इन्द्रिय व मन से होने वाले ज्ञान को मतिज्ञान कहते हैं इसके कुल ३३६ (तीन सौ छत्तीस) भेद होते हैं।

प्र.3 **श्रुत ज्ञान किसे कहते हैं, इसके कितने व कौन-कौन से भेद हैं ?**

उ०. मतिज्ञान के उपरान्त होने वाले विशिष्ट ज्ञान को श्रुत ज्ञान कहते हैं, इसके मुख्य दो भेद हैं:-

1. अंग प्रविष्ट 2. अंग बाह्य।

प्र.4 **अवधिज्ञान व मनः पर्ययज्ञान किसे कहते हैं ?**

उ०. द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा लिये हुये रूपी पदार्थ को जो एक देश प्रत्यक्ष जानता है, वह अवधिज्ञान है तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा लिये दूसरे के मन के विचारों को जिस ज्ञान के द्वारा जाना जाता है, वह मनःपर्यय ज्ञान होता है। अवधिज्ञान के भव प्रत्यय व गुण प्रत्यय ऐसे दो भेद होते हैं तथा मनः पर्यय ज्ञान के ऋजुमती व विपुलमति ऐसे दो भेद हैं।

प्र.5 **केवलज्ञान किसे कहते हैं ?**

उ०. लोकाकाश व अलोकाकाश में विद्यमान समस्त द्रव्य, गुण व पर्यायों के त्रिकालवर्ती प्रत्यक्ष ज्ञान को केवल ज्ञान कहते हैं।

अध्याय - 6

सम्यक् चारित्र

प्र.1 सम्यक् चारित्र किसे कहते हैं ?

उ०. अशुभ (पाप) कर्मों से निवृत्ति एवं शुभ कार्यों (पुण्य कार्यों) में प्रवृत्ति करने को ही सम्यक् चारित्र कहते हैं ।

प्र.2 सम्यक् चारित्र के मुख्य कितने भेद हैं ?

उ०. सम्यक् चारित्र के मुख्य रूप से दो भेद हैं:-

1. देश चारित्र 2. सकल चारित्र

प्र.3 देश चारित्र किसे कहते हैं?

उ०. पांच अणु व्रत + तीन गुणव्रत + चार शिक्षाव्रत- इन बारह व्रतों का, आठ मूलगुण व श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं का पालन करना ही देश चारित्र कहलाता है।

प्र.4 सकल चारित्र किसे कहते हैं ?

उ०. पांच महाव्रत+पांच समिति+तीन गुप्ति-तेरह प्रकार के चारित्र को सकल चारित्र कहते हैं, जिसका मुनिगण पालन करते हैं।

प्र.5 महाव्रत, समिति व गुप्ति की परिभाषायें बताओ ?

उ०. महाव्रत-हिंसादि पांचों पापों का मन, वचन, काय से यावज्जीवन त्याग करना महाव्रत कहलाता है।

समितिः- सावधानी पूर्वक चलना, बोलना, आहार करना, वस्तुओं का उठना व रखना तथा मल त्याग करने रूप प्रवृत्ति करना ही समिति है।

गुप्तिः- मन, वचन, काय का गोपन करना अर्थात मन, वचन, काय की अशुभ प्रवृत्ति का त्याग करना अर्थात सर्व प्रवृत्ति का त्याग करना ही गुप्ति है।

अध्याय - 7

देव पूजा

प्र.1 देवपूजा किसे कहते हैं?

उ०. वीतरागी जिनेन्द्र भगवान की भाव सहित अष्ट द्रव्य से उनके गुण प्राप्ति के उद्देश्य से जिनार्चना, गुणानुवाद करना ही देव पूजा है।

प्र.2 पूजन के आठ द्रव्य कौन-कौन से हैं?

उ०. पूजन के आठ द्रव्य हैः-

1. जल	2. चंदन	3. अक्षत (चावल)
4. पुष्प	5. नैवेद्य	6. दीपक
7. धूप	8. फल।	

प्र.3 पूजन के कितने व कौन-कौन से अंग हैं?

उ०. पूजन के नव अंग होते हैं:-

1. अभिषेक करना 2. विनय पाठादि पढ़कर आह्वानन करना 3. स्थापना करना, 4. सन्निधिकरण करना, 5. अष्टद्रव्य से पूजा करना, 6. जयमाला पढ़ना 7.जाप लगाना 8. शांतिपाठ पढ़ना 9. विसर्जन पाठ पढ़ना।

प्र.4 अभिषेक व पूजन करने का अधिकारी कौन होता है ?

उ०. सच्चे देव, शास्त्र गुरु का परम भक्त हो, उच्च कुल में पैदा हुआ परिपूर्ण अंग-उपांग हों, कुल को कलंकित करने वाला कोई कार्य नहीं किया हो, स्वस्थ व प्रसन्नचित्त हो, इत्यादि योग्यता वाला व्यक्ति ही अभिषेक व पूजन का अधिकारी होता है।

प्र.5 अभिषेक व पूजन करने का क्या फल होता है?

उ०. अभिषेक पूजन करने से पाप कर्मो का नाश होता है, अशुभ भावों का संवर, पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा एवं सातिशय पुण्य का बंध होता है तथा जिनेन्द्र भगवान की पूजन परम्परा से परमात्म पद को देने वाली होती है।

अध्याय - 8

गुरु उपासना व दान

प्र.1 गुरु किसे कहते हैं ?

उ०. विषय, कषाय, आरम्भ, परिग्रह, से रहित तथा ज्ञान, ध्यान तप में लीन, यथाजात दिगम्बर संत ही सच्चे गुरु कहलाते हैं।

प्र.2 गुरु उपासना किसे कहते हैं ?

उ०. दिगम्बर साधुओं (आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, गणधर, साधु आदि) की सेवा, वैय्यावृत्ति करना आहार आदि दान देना ही गुरु उपासना कहलाती है।

प्र.3 दान किसे कहते हैं ?

उ०. अपने न्यायोपार्जित धन के द्वारा साधुओं को आहारादि दान देना, दान कहलाता है।

प्र.4 दान के कितने व कौन-कौन से भेद हैं ?

उ०. दान के मुख्य रूप से चार भेद हैं:-

1. आहार दान
2. औषधिदान
3. ज्ञानदान
4. अभयदान/वसतिका दान

प्र.5 उक्त चार दानों में कौन-कौन प्रसिद्ध हुआ तथा इन चारों प्रकार के दानों का क्या फल होता है ?

उ०. आहार दान में श्रीषेण राजा, औषधिदान में वृषभ सेना, ज्ञानदान में कोण्डेश ग्वाला एवं वसतिका दान में शूकर प्रसिद्ध हुआ। इनकी कथायें अपने गुरु जी से सुनो। आहार दान के फल से उत्तमोत्तम भोग, औषधिदान से आरोग्य लाभ, ज्ञानदान से अनंतज्ञान एवं अभयदान या वसतिका दान से उत्तम महल व निर्भयता की प्राप्ति होती है।

अध्याय - 9

स्वाध्याय

प्र.1 स्वाध्याय किसे कहते हैं ?

उ०. जिनेन्द्र भगवान द्वारा कथित, गणधर परमेष्ठीयों द्वारा संग्रहीत एवं मुनिराजों द्वारा लिपिबद्ध आगमशास्त्रों का आत्म कल्याण हेतु पढ़ना, याद करना, चिन्तन करना आदि स्वाध्याय कहलाता है।

प्र.2 स्वाध्याय के कितने व कौन-कौन से भेद हैं ?

उ०. स्वाध्याय के पांच भेद हैं:-

1 वाचना, 2.पृच्छना, 3. अनुप्रेक्षा 4. आम्नाय 5. धर्मोपदेश ।

प्र.3 वाचना, पृच्छना आदि स्वाध्याय के पांच भेदों की परिभाषा बताओ।

उ०. वाचनाः- शास्त्रों का स्व-पर की आत्म हितार्थ पढ़ना।

पृच्छनाः- शास्त्रों को पढ़ने के उपंरात उनमें उत्पन्न हुई शंकाओं को गुरूजनों से पूछना पृच्छना नाम का स्वाध्याय है।

अनुप्रेक्षाः- स्वाध्याय के उपंरात पठित विषय को कण्ठस्थ करना अनुप्रेक्षा नामक स्वाध्याय है।

आम्नायः- शुद्धतापूर्वक पाठ करना आम्नाय हैं।

धर्मोपदेशः- जो विषय अच्छी तरह से व पूरी तरह से समझ में आ चुका हो, उसे दूसरों को समझाना धर्मोपदेश नाम का स्वाध्याय है।

प्र.4 धर्मोपदेश देने के अधिकारी कौन-कौन होते हैं ?

उ०. तीर्थंकर भगवान, उनके अभाव में केवली, उनके अभाव में गणधर या आचार्य परमेष्ठी, उनके अभाव में उपाध्याय, उनके अभाव में गुरू आज्ञा से साधु परमेष्ठी धर्मापदेश के अधिकारी होते हैं।

प्र.5 स्वाध्याय करने का क्या फल है ?

उ०. स्वाध्याय करने से अज्ञान का नाश, ज्ञान की वृद्धि, सम्यक्त्व में दृढ़ता वैराग्य की उत्पत्ति, संवेग की वृद्धि, संयम या चारित्र में निर्मलता, तप व ध्यान की वृद्धि और परम्परा से अनंतज्ञान की प्राप्ति होती है।

अध्याय - 10

ध्यान

प्र.1 **ध्यान किसे कहते हैं? ध्यान के कितने व कौन से भेद हैं?**

उ०. किसी भी एक विषय में चित्त का एकाग्र होना ध्यान है, ध्यान के मुख्य रूप से चार भेद हैं:-

1. आर्त्तध्यान, 2. रौद्र ध्यान, 3. धर्मध्यान, 4. शुक्ल ध्यान। इनमें से प्रारम्भ के दो ध्यान संसार के कारण हैं और दो ध्यान मोक्ष के कारण हैं।

प्र.2 **आर्त्तध्यान किसे कहते हैं, इसके कितने व कौन-कौन से भेद हैं ?**

उ०. जिसमें अर्त्तरूप यानि दुःख रूप भाव हों वह आर्त्त ध्यान है, यह ध्यान तिर्यंच गति का कारण हेाता है, इस आर्त्तध्यान के चार भेद हैं:-

1. इष्ट वियोगज, 2. अनिष्ट संयोगज, 3. पीड़ा चिन्तन, 4. निदानबंध।

प्र.3 **रौद्र ध्यान किसे कहते हैं, इसके कितने व कौन-कौन से भेद हैं ?**

उ०. जिसमें रौद्र परिणाम हों अर्थात पाप कार्यों में आनन्द रूप परिणाम हों, वह रौद्र ध्यान है, रौद्र ध्यान नरक गति का कारण है, इसके चार भेद हैं,

1. हिंसानंदी रौद्र ध्यान
2. मृषानंदी रौद्र ध्यान
3. चौर्यानंदी रौद्र ध्यान
4. विषय संरक्षणानंदी रौद्र ध्यान।

प्र.4 **धर्म ध्यान किसे कहते हैं इसके कितने व कौन-कौन से भेद हैं ?**

उ०. धर्म में/सम्यक् ज्ञान में चित्त की स्थिरता को धर्म ध्यान कहते हैं, वह धर्म ध्यान देवगति व मनुष्य गति का कारण है, परम्परा से मोक्ष का कारण है, इसके मुख्य चार भेद होते हैं:-

1. आज्ञा विचय धर्मध्यान
2. अपायविचय धर्म ध्यान
3. विपाक विचय धर्म ध्यान
4. संस्थान विचय धर्म ध्यान।

प्र.5 **शुक्ल ध्यान किसे कहते हैं, इसके कितने व कौन-कौन से भेद हैं ?**

उ०. कषाय की अत्यंत मंदता व क्षीणअवस्था में उपयोग की या चित्त की निर्मलता रूप परिणामों से युक्त शुक्ल ध्यान होता है, यह शुक्ल ध्यान मोक्ष का ही कारण है। इसके भेद हैं:-

1 पृथक्त्व वितर्क
2. एकत्व वितर्क
3. सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति
4. व्युपरत क्रिया निर्वृत्ति

पुण्यार्जक श्रावक

श्री पूरन चंद जैन

श्रीमति सोनाली जैन धर्म पत्नी राज कुमार जैन
श्रीमति नीतू जैन धर्म पत्नी अजय कुमार जैन
श्रीमति नेहा जैन धर्म पत्नी विजय कुमार जैन
व अभिषेक,नमन,प्रिया,रौनक,लामनिया,जेयांशी,लाभेश मनोज्ञा
के सौजन्य से ३००० प्रतियॉ प्रकाशित

जैसवाल जैन अगरया परिवार
श्री जिनशासन तीर्थ क्षेत्र (जैन नगर)नाका मदार
अजमेर राज.

प. पू. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी,दीक्षा सम्राट आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी महाराज द्वारा रचित, संपादित साहित्य

1. निज अवलोकन
2. देशभूषण कुलभूषण चरित्र
3. हमारे आदर्श
4. चित्रसेन पद्मावती चरित्र
5. नंगानंग कुमार चरित्र
6. धम्म रसायण
7. मौनव्रत कथा
8. सुदर्शन चरित्र
9. प्रभंजन चरित्र
10. सुरसुन्दरी चरित्र
11. जिनश्रमण भारती
12. सर्वोदयी नैतिक धर्म
13. चारुदत्त चरित्र
14. करकण्डु चरित्र
15. रयणसार
16. नागकुमार चरित्र
17. सीता चरित्र
18. योगामृत भाग-1
19. योगामृत भाग-2
20. आध्यात्मतरंगिणी
21. सप्त व्यसन चरित्र
22. वीर वर्धमान चरित्र भाग-1
23. वीर वर्धमान चरित्र भाग-2
24. भद्रबाहु चरित्र
25. हनुमान चरित्र
26. महापुराण भाग-1
27. महापुराण भाग-2
28. योगसार-भाग-1
29. योगसार-भाग-2
30. भव्य प्रमोद
31. सदार्चन सुमन
32. तत्वार्थ सार
33. कल्याण कारक
34. श्री जम्बूस्वामी चरित्र
35. आराधना सार
36. यशोधर चरित्र
37. व्रतकथा संग्रह
38. तनाव से मुक्ति
39. उपासकाध्ययन भाग -1
40. उपासकाध्ययन भाग -2
41. रामचरित्र भाग-1
42. रामचरित्र भाग-2
43. नीतिसार समुच्चय
44. आराधना कथा कोश भाग-1
45. आराधना कथा कोश भाग-2
46. आराधना कथा कोश भाग-3
47. दशामृत (प्रवचन)
48. सिन्दूर प्रकरण
49. प्रबोध सार
50. शान्तिनाथपुराण भाग-1
51. शान्तिनाथ पुराण भाग-2
52. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार
53. सम्यक्त्व कौमुदी
54. धर्मामृत भाग-1
55. धर्मामृत भाग-2
56. पुण्य वर्द्धक
57. पुण्यास्रव कथा कोश भाग-1
58. पुण्यास्रव कथा कोश भाग-2
59. चौंतीस स्थान दर्शन
60. अकंपमती
61. सार समुच्चय
62. दान के अचिन्त्य प्रभाव
63. पुराण सार संग्रह भाग-1
64. पुराण सार संग्रह भाग-2
65. आहार दान
66. सुलोचना चरित्र
67. गौतम स्वामी चरित्र
68. महीपाल चरित्र
69. जिनदत्त चरित
70. सुभौम चक्रवर्ती चरित्र
71. चेलना चरित्र
72. धन्यकुमार चरित्र
73. सुकुमाल चरित्र
74. कुरल काव्य
75. धर्म संस्कार भाग-1
76. प्रकृति समुत्कीर्तन
77. भगवती आराधना
78. निर्ग्रंथ आराधना
79. निर्ग्रंथ भक्ति
80. कर्मप्रकृति
81. पूजा-अर्चना
82. नौ-निधि
83. पंचरत्न
84. व्रताधीश्वर-रोहिणी व्रत
85. तत्वार्थस्य संसिद्धि
86. रत्नकरण्डक श्रावकाचार
87. तत्त्वार्थ सूत्र
88. छहढाला (तत्त्वोपदेश)
89. छत्रचूड़ामणि(जीवंधर चरित्र)
90. धर्म संस्कार भाग-2
91. गागर में सागर
92. स्वाति की बूँद
93. सीप का मोती
    (महावीर जयन्ती प्रवचन)
94. भावत्रय फलप्रदर्शी
95. सच्चे सुख का मार्ग

96. तनाव से मुक्ति-भाग-2
97. कर्म विपाक
98. अन्तर्यात्रा
99. सुभाषित रत्न संदोह
100. अरिष्ट निवारक विधान संग्रह
101. पंचपरमेष्ठी विधान
102. श्री शांतिनाथ भक्तामर, सम्मेदशिखर विधान
103. मेरा संदेशा
104. धर्म बोध संस्कार 1,2,3,4
105. सप्त अभिशाप
106. दिगम्बरत्वः क्या, क्यों, कैसे?
107. जिनदर्शन से निजदर्शन
108. निश भोजन त्यागः क्यों?
109. जलगालनः क्या, क्यों, कैसे?
110. धर्मः क्या, क्यों, कैसे?
111. श्री महावीर भक्तामर स्तोत्र
112. मीठे प्रवचन 1,2,3
113. कल्याणी
114. कलम-पट्टी बुद्धिका
115. चूको मत
116. खोज क्यों रोज-रोज
117. जागरण
118. सीप का मोती
119. जय बजरंग बली
120. शायद यही सच है
121. डाक्टरों से मुक्ति
122. आ जाओ प्रकृति की गोद में
123. भगवती आराधना
124. चैन की जिन्दगी
125. धर्मरत्नाकर
126. हाइकू
127. स्वप्न विचार
128. क्षरातीत अक्षर
129. वसुनंदी उवाच
130. चन्द्रप्रभ चरित्र
131. चन्द्रप्रभ विधान
132. कोटिभट्ट श्रीपाल चरित्र
133. महावीर पुराण
134. वरांग चरित्र
135. पदमपुराण
136. विषापाहार स्तोत्र
137. पाण्डव पुराण
138. हीरों का खजाना
139. तत्वभावना
140. सम्राट चन्द्रगुप्त
141. जीवन का सहारा
142. धर्म की महिमा
143. जिन कल्पि सूत्रम्
144. विद्यानंद उवाच
145. सफलता के सूत्र
146. तत्वज्ञान तरंगड़ी
147. जिन कल्पि सूत्रम्
148. दुःखों से मुक्ति
149. णमोकार महार्चना
150. समाधि तंत्र
151. सुख का सागर
152. पुरूषार्थ सिद्धीउपाय
153. सुशीला उपन्यास
154. तैयारी जीत की
155. सदार्चन सुमन
156. शान्तीनाथ विधान
157. दिव्यलक्ष्य
158. आधुनिक समस्याऐं प्रमाणिकसमाधान
159.वसुऋद्धि
160.संस्कारादित्य
161.मुक्तिदूत के मुक्तक
162.श्रुत निर्झरी
163. जिन सिद्धांत महोदधि
164. उत्तम क्षमा
165. मान महा विष रूप
166. तप चाहें सुर राय
167. जिस बिना नहिं जिनराज सीजे
168. निज हाथ दीजे साथ लीजे
170. परिग्रह चिंता दुःख ही मानो
171. रंचक दगा बहुत दुःख दानी
172. लोभ पाप को बाप बखाना
173. सतवादी जग में सुखी
174. उत्तम ब्रह्मचर्य
175. पार्श्वनाथ पुराण
176. गुण रत्नाकर
177. नारी का धवल पक्ष
178. खुशी के आंसू
179. आज का निर्णय
180. गुरू कृपा
181. तत्व विचारो सारो
182.अजितनाथ विधान

प्रेस में:-

फर्श से अर्श तक
स्वास्थ बोधामृत
कुछ कलियाँ कुछ फूल
प्रभाती संग्रह
आदिनाथ विधान
मुनिसुव्रतनाथ विधान
नेमिनाथ विधान
नवग्रह विधान
आराधना समुच्चय
आदि

सम्पूर्ण विश्व की हलचलों व आचार्य श्री वसुनंदी जी गुरूदेव ससंघ की जानकारी घर बैठे प्राप्त करने के लिऐ

श्री सत्यार्थी मीडिया

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका के सदसस्य बनें

9058017645